eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

# निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन

**शबाना बी**[1]
**शोधार्थी,** एम0एड0 (शिक्षा) आई0एफ0टी0एम0 विश्वविद्यालय, मुरादाबाद उ0प्र0

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Dec 2024

## Abstract

प्रस्तुत अध्ययन **''निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन''** में मुख्य उद्देश्य के रूप में निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना है। तथा परिकल्पनाओं के रूप में निजी एंव सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव मे सार्थक अन्तर नहीं होगा। न्यादर्श के रूप मे रामपुर तहसील के निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के रैन्डम सैम्पलिंग विधि से चयन किया गया है तथा अन्तिम न्यादर्श के रूप में 200 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं को रैन्डम क्लस्टर विधि से चयनित किया गया है। शोधकर्त्री ने अपने इस शोध कार्य में क्षेत्र प्रयोग विधि का प्रयोग करके जो परिणाम प्राप्त किए हैं उनकी वैधता की कसौटी के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किए हैं।

शोधार्थी ने अपने शोध कार्य हेतु व्यावसायिक तनाव मापनी ए0के0 श्रीवास्तव एवं ए0पी0 सिंह द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया है शोध पत्र के निष्कर्ष मे निजी एंव सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव मे सार्थक अन्तर पाया गया ।

**शब्द कोष –** परिकल्पना, न्यादर्श, क्षेत्र प्रयोग विधि, व्यावसायिक तनाव, अनुसंधान, यादृछिक, नमूना, क्लस्टर विधि।

## Introduction

शिक्षा मानव के विकास का मूल साधन है। इसी के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है एवं शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है तथा उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा का दायित्व उसके समाज पर होता है, जिसे समाज अनेक साधनों से पूरा करता है, उन्हीं साधनों में से एक प्रमुख साधन **"विद्यालय"** है। विद्यालय के महत्व पर प्रकाश डालते हुये **एस० बालकृष्ण जोशी** ने कहा है–**''किसी भी राष्ट्र की प्रगति का निर्माण विधान सभाओं, न्यायालयों और फैक्ट्रियों में नहीं वरन् विद्यालयों में होता है।''**

अतः किसी भी सामाजिक तन्त्र में विद्यालय के महत्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति शिक्षक होता है। बालक तो उस कच्ची मिट्टी के समान होता है, जिसे एक कुशल कुम्भकार (शिक्षक) अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार रूप प्रदान करता है। बालक बगिया के उस फूल के समान होता है, जिसके विकास के लिये एक कुशल माली (शिक्षक) की देख– रेख की आवश्यकता होती है। शिक्षक ही राष्ट्रीय एवं भौगोलिक सीमाओं को लॉघकर विश्व व्यवस्था तथा मानव जाति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

अतः एक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है, कि वह बालक पर अपना सर्वोत्तम प्रभाव डाले। अध्यापक को उन सभी बातों का त्याग करना चाहिए, जो तुच्छ एवं हीन हों, क्योंकि उसी पर समस्त छात्रों की दृष्टि लगी रहती है। शिक्षक स्वयं को अपने छात्रों पर प्रभाव डालने से नहीं बचा सकता। इसलिये यह आवश्यक है कि वह सदैव उच्च आदर्शों एवं विचारों को मन, वचन तथा कर्म से व्यवहार में लाए। जिनका बालकों पर सर्वोत्तम प्रभाव पड़ सके।

शिक्षा शब्द संस्कृत की 'शिक्ष' धातु से बना है और इसका अर्थ है सीखना। सीखाने की प्रक्रिया शिक्षक, छात्र तथा पाठ्यक्रम द्वारा सम्पादित होती है।

**माध्यमिक शिक्षा आयोग ने** अपने प्रतिवेदन में लिखा है कि ''अपेक्षित शिक्षा के पुनर्निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण तत्व शिक्षक उसके गुण, उसकी शैक्षिक योग्यतायें, उसका व्यावसायिक प्रशिक्षण और उसकी स्थिति जो कुछ विद्यालय तथा समाज में ग्रहण करता है,। विद्यालय की प्रतिष्ठा तथा समाज के जीवन पर उसका प्रभाव निःसन्देह रूप से उन शिक्षकों पर निर्भर है, जो कि उस विद्यालय में कार्य कर रहे हैं''

**समस्या का उद्भव एवं विकास :–** समाज एक शिक्षक से उच्च आदर्श तथा महान उत्तरदायित्व की अपेक्षा करता है, लेकिन यह तभी सम्भव है जब शिक्षक पूरी ईमानदारी, योग्यता, परिश्रम तथा लगन से अपने कर्तव्यों तथा दायित्वों का निर्वहन करे। लेकिन कुछ कारणों से आज शिक्षक अपने उत्तरदायित्व से पीछे हट रहा है तथा वह उच्च आदर्शों के पालन में अपने आप को असफल पा रहा है तथा छात्रों एवं समाज दोनों की अपेक्षाओं को पूरा करने में भी स्वयं को असमर्थ पा रहा है। शिक्षक की इस असफलता के पीछे कई कारण हैं। जिनमें से शोधकर्ती ने एक प्रमुख कारण **"तनाव"** को शोध हेतु चुना है।

**बर्नियूँने (1982)** के शोध में यह परिणाम प्राप्त हुआ कि ''**उच्च तनाव में अध्यापक छात्रों की आवष्यकता को प्रभावषाली ढंग से पूरा नहीं कर पाते'।**

**तनाव–** तनाव आधुनिक समाज की एक गम्भीर समस्या है तनाव को अंग्रेजी मे ''स्ट्रैस'' कहा जाता है तनाव को किसी ऐसे शारीरिक, रासायनिक या भावनात्मक कारक के रूप मे समझा जा सकता है। जो शारीरिक तथा मानसिक रोग का निर्माण करता है। ऐसे शारीरिक या रासायनिक कारक जो तनाव पैदा कर सकते हैं उनके सदमा, संक्रमण, विष, बीमारी तथा किसी प्रकार की चोट शामिल है। तनाव देने वाले कारणों को पहचानना तनाव को दूर करने की दिशा मे उठाया जाने वाला पहला कदम है।

**व्यावसायिक तनाव :–** व्यावसायिक तनाव व्यक्ति के प्रत्यक्ष योग्यता से अधिक कार्य की मांग करना है। जब व्यक्ति कार्य को अच्छी तरह से करने के लिए तैयार न हो, तब दबाव होता है तथापि विद्यार्थी और अध्यापक दोनों के जीवन में दबाव का मुख्य स्रोत विद्यालय को समझा जाता है। इसलिए बहुत से विद्यार्थी पढाई छोड़ देते हैं या फेल हो जाते हैं जो प्रत्येक के लिए सही नहीं होता है। अध्यापक दबाव को नकारात्मक संवेग जैसे क्रोध, चिंता, तनाव, न्यूनता, निराशा आदि के अनुभव के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

**सम्बंधित साहित्य का अध्ययन :–**

1. **गौड, (1973)** ने नई दिल्ली के माध्यमिक विद्यालयों के 20 छात्रों, 98 छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन किया। तथा निष्कर्ष निकाला कि उच्च बुद्धि वाले बालकों की व्यावसायिक आकांक्षा का स्तर अधिक था ।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

2. **पीयर्स, तथा फोगार्टी (1995)** ने व्यावसायिक शिक्षकों में तनाव का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि पुरूष शिक्षकों में महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा तनाव अधिक था।
3. **उपाध्याय, बालकृष्ण तथा सिंह भूपेन्द्र (2001)** ने इण्टर कॉलेज तथा डिग्री कॉलेज के अध्यापकों में व्यावसायिक तनाव का अध्ययन किया । तथा पाया कि उच्च विद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा तनाव कम था।
4. **लेथ, कुमार संदीप (2012)** ने सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयो में कार्यरत शिक्षकों का उम्र, लिंग व अनुभव के आधार पर व्यावसायिक तनाव का अध्ययन किया । तथा निष्कर्ष निकाले कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा पुरूष शिक्षक अधिक तनावग्रस्त है।
5. **संध्या दूबे एवं डॉ0 दिलीप कुमार शुक्ला (2021)**, ने शिक्षकों प्रभावशीलता के बीच व्यावसायिक तनाव का अध्ययन किया। और पाया कि शारीरिक अभिव्यक्यिां जो व्यावसायिक तनाव का परिणाम हो सकती है।
6. **डॉ0 अनूप बलूनी (2019)**, ने माध्यमिक स्तर के 100 सरकारी एवं 100 गैरसरकारी शिक्षको के व्यावसायिक तनाव का अध्ययन किया । तथा पाया कि सरकारी तथा गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में क्षेत्र व लिंग के आधार पर व्यावसायिक तनाव के बीच सार्थक अन्तर है ।
7. **डॉ0 शाहिदा सिददीकी, सीमा पटेल (2023),** ने कार्यकारी महिलाओं में व्यावसायिक तनाव का अध्ययन किया गया। तथा निष्कर्ष निकाले कि अशासकीय संस्थानों मे कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव, शासकीय संस्थानों मे कार्यरत महिला कर्मचारियों में व्यावसायिक तनाव की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक होता है।

**अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–** मानव समाज एवं देश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर निर्भर है। शिक्षक किसी भी शिक्षण संरचना का प्रमुख स्तम्भ होता है। **हुमायूँ कबीर ने कहा है कि ''वे (शिक्षक) राष्ट्र के भाग्य निर्णायक हैं''** यह कथन प्रत्यक्ष रूप से सत्य प्रतीत होता है परन्तु अब इस बात पर अधिक बल देने की आवश्यकता है कि शिक्षक ही शिक्षा के पुनर्निर्माण की महत्वपूर्ण कुंजी है।

यह शिक्षक वर्ग की योग्यता ही है, जो कि निर्णायक है। हुमायूँ कबीर ने आगे लिखा है कि शिक्षा पद्धति की कुशलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर है। अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा पद्धति का भी असफल होना अवश्य है। अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है।

**समस्या कथन :– ''निजी एंव सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों कें कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव व तुलनात्मक अध्ययन।''**

**शोध पत्र अध्ययन के उद्देश्यः–** प्रस्तुत शोध पत्र की समस्या के अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं –

1. निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
2. निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

**अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–** प्रस्तुत शोध पत्र की समस्या के अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनायें निर्मित की जायेगी–

1. निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

**समस्या कथन मे प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्याः–**

1. **माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकायें–** माध्यमिक विद्यलाय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं सें तात्पर्य उन शिक्षक एवं शिक्षिकाओं से है जो 9वीं से 12वीं कक्षा मे विभिन्न विषय में अध्यापन कार्य कर रहें हैं।
2. **व्यावसायिक तनाव–** तनाव एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जो लोगों में वैसी घटनाओं या परिस्थितियों के प्रति अनुक्रिया के रूप में उत्पन्न होती है, जो हमारे दैहिक एवं मनोवैज्ञानिक कार्यों को विघटित करता है। मनोवैज्ञानिक तनाव भग्नाशा, अत्यधिक दबाव एवं अपने मनोवेगों तथा वातावरण पर नियन्त्रण की कमी की भावनाओं द्वारा अभिव्यक्त होता है। जब यह तनाव व्यवसाय के कारण उत्पन्न हो तो उसे **''व्यावसायिक तनाव''** कहते हैं।

**न्यादर्श :–** प्रस्तुत अध्ययन में रामपुर तहसील के निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों का रैन्डम सैम्पलिंग विधि से चयन किया गया है तथा अन्तिम न्यादर्ष में रूप में 200 शिक्षकों का रैन्डम क्लस्टर विधि से चयनित किया गया है।

**अध्ययन विधि :–** प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्र प्रयोग विधि का प्रयोग किया गया है।

**चर :–** प्रस्तुत अध्ययन में निजी व सहायता प्राप्त स्तर स्वतन्त्र चर तथा व्यावसायिक तनाव परतन्त्र चर है ।

**उपकरण :–** व्यावसायिक तनाव मापन हेतु डॉ० ए० के० श्रीवास्तव तथा डॉ० ए०पी० सिंह द्वारा निर्मित व्यावसायिक तनाव मापनी।

**सांख्यिकीय तकनीकी :–** प्रस्तुत अध्ययन में द्वि–पुच्छीय टी–परीक्षण का प्रयोग किया।

**समस्या का परिसीमांकन :–**

1. प्रस्तुत अध्ययन में केवल माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को लिया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु रामपुर तहसील के माध्यमिक विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में केवल 200 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का ही चयन किया गया है।

**आंकड़ो का संकतन विश्लेषण एवं व्याख्या :–** शोधार्थी ने विभिन्न सांख्यिकीय विधियों द्वारा निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए उनका विश्लेषण किया गया है। शोधार्थी ने आकड़ो की गण्ना हेतु सर्वप्रथम प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर प्रत्येक चर का मध्यमान ज्ञात किया, इसके पश्चात् प्राप्त मध्यमान के आधार पर प्रमाणिक (मानक विचलन) निकाला, तत्पश्चात् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के चर का तुलनात्मक अध्ययन हेतु द्वि–पुच्छीय टी–परीक्षण का प्रयोग किया। प्राप्त परिणामों का सारणीय व उनकी व्याख्या निम्न प्रकार है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

## तालिका–1

**परिकल्पना $Ho^1$**

निजि एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षिको के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

| प्रतिदर्श | N | M | S | D | $o_D$ | df | T | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक | 46 | 137.26 | 13.09 | 12.93 | 3.28 | 89 | 3.94 | 0.05=1.99<br>0.01=2.63<br>सार्थक |
| सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक | 45 | 124.33 | 17.83 | | | | | |

**अर्थापन–** उपयुक्त तालिका–01 निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव का विश्लेषण प्रस्तुत करती है। निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव का मध्यमान क्रमशः 137.26 तथा 124.33 तथा मानक विचलन क्रमशः 13.09 तथा 17.83 है। साथ ही इनके अन्तर की सार्थकता के टी का मान 89 स्वतन्त्रता के अंश पर 3.94 है जो कि 0.05 स्तर पर तथा 0.01 स्तर पर दिये गये सारणीमान क्रमशः 1.99 तथा 2.63 से अधिक है। इसलिये शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

**निष्कर्ष –** अतः दोनों मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर है। इस प्रकार निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों में व्यावसायिक तनाव सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की तुलना में वास्तविक रूप से अधिक है। इससे शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक तनाव में रहतें है। इसके पीछे शायद निजी माध्यमिक विद्यालयों से मिलने वाला कम वेतन अत्याधिक कार्यभार तथा भविष्य के प्रति असुरक्षा की भावना मुख्य कारण हो सकते हैं।

**तालिका चार्ट संख्या – 1**

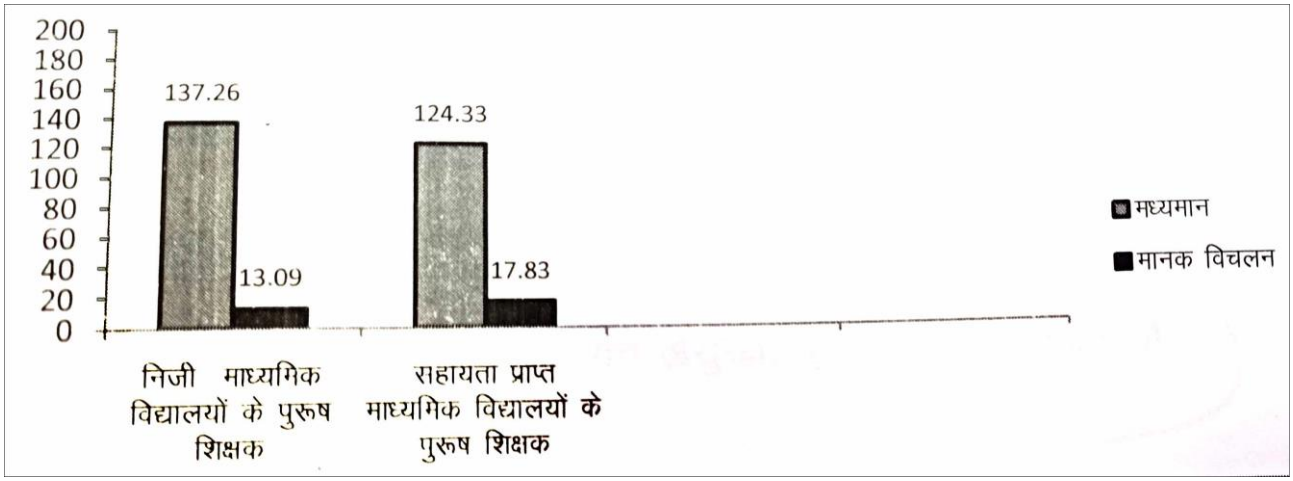

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव के मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित करने वाला चित्र।

**तालिका – 2**

**परिकल्पना $Ho^2$**

निजि एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

| प्रतिदर्श | N | M | S | D | $o_D$ | df | T | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकायें | 54 | 136.66 | 12.98 | 13.02 | 2.80 | 107 | 4.65 | 0.05=1.98<br>0.01=2.63<br>सार्थक |
| सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकायें | 55 | 123.64 | 16.18 | | | | | |

**अर्थापन–** तालिका 2 निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव का विश्लेषण प्रस्तुत करती है। निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव का मध्यमान क्रमशः 136.66 तथा 123.64 तथा मानक विचलन क्रमशः 12.98 तथा 16.18 है।

साथ ही इनके अन्तर की सार्थकता के टी का मान 107 स्वतन्त्रता के अंश पर 4.65 है जो कि 0.05 स्तर पर तथा 0.01 स्तर पर दिये गये सारणीमान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से अधिक है इसलिये शून्य परिकल्पना निरस्त होती है।

अतः दोनों मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर है इस प्रकार निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं में व्यावसायिक तनाव सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं की तुलना में वास्तविक रूप से अधिक है। इससे शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकायें सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक तनाव में रहती है। इसका कारण निजी माध्यमिक विद्यालयों में मिलने वाला कम वेतन एवं भविष्य के प्रति असुरक्षा की भावना हो सकता है। जबकि सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में इस प्रकार की कोई समस्या नहीं होती है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

**तालिका चार्ट संख्या – 2**

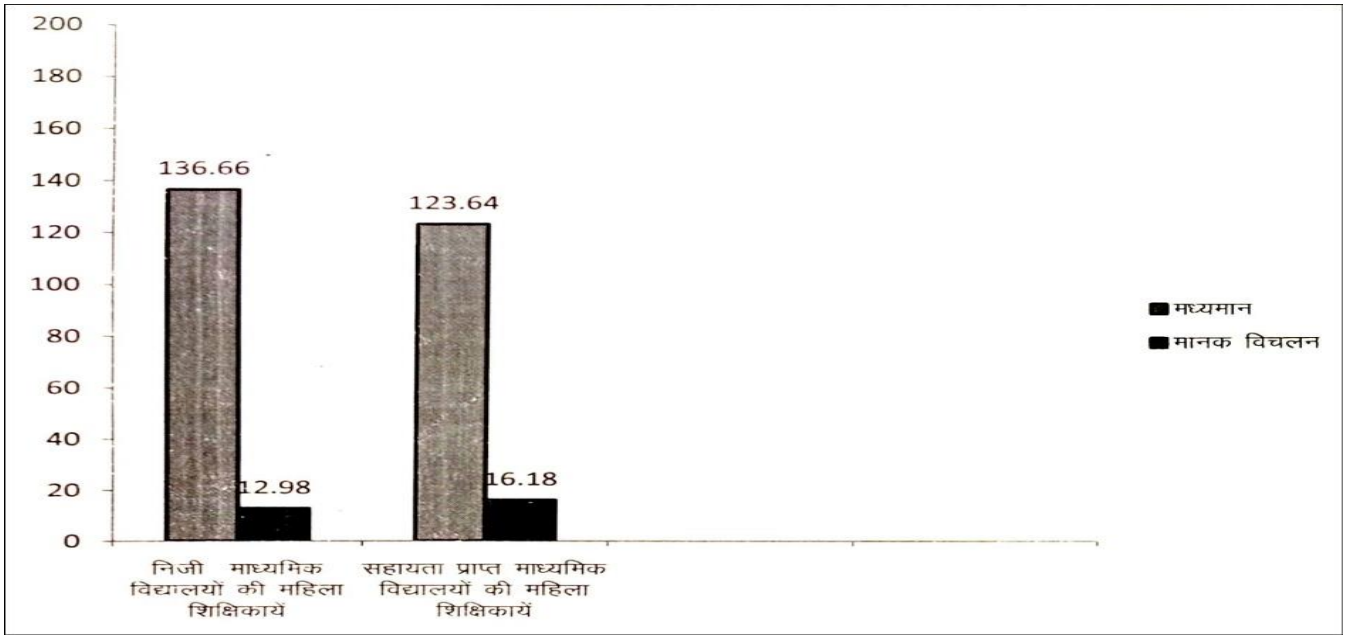


निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव के मध्यमान एंव मानक विचलन को प्रदर्शित करने वाला चित्र।

**निष्कर्ष :–** प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने पर शोधकर्ती ने निम्नलिखित परिणाम प्राप्त किये–

1. निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में में कार्यरत पुरूष शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर है।

   इसका कारण निजी माध्यमिक विद्यालयों से मिलने वाला कम वेतन, अत्याधिक कार्यभार तथा भविष्य के प्रति असुरक्षा की भावना हो सकती है।
2. निजी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर है।

   इसका कारण निजी माध्यमिक विद्यालयों से मिलने वाला कम वेतन एवं भविष्य के प्रति असुरक्षा की भावना हो सकती है जबकि सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में इस प्रकार की कोई समस्या नहीं होती है।

**शोध अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ :–** प्रस्तुत शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्षो को हम भविष्य में शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव को कम करने एवं उनकी गुणवत्ता को बढ़ाने हेतु प्रभावी कदम उठाने में उपयोग कर सकते है। व्यावसायिक तनाव का कारण अत्याधिक कार्यभार, शिक्षकों की भागीदारी एवं योग्यता से कम महत्व हो सकता है।

भविष्य मे शिक्षकों का वेतन बढ़ाकर उनके लिये माध्यमिक विद्यालयों मं पूर्ण भागीदारी तथा शिक्षकों की योग्यता को महत्व देकर उनके तनाव को कम किया जा सकता है। तथा विद्यालयों में एक उचित वातावरण तैयार करके एवं कुछ ऐसी शिक्षक कल्याणकारी योजनायें बनाई जायें जिससे माध्यामिक विद्यालयों के शिक्षकों को भविष्य के प्रति असुरक्षा की भावना न हो ।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

**अध्ययन हेतु सुझावः–**

1. प्रस्तुत लघु शोध में तनाव के केवल एक कारक व्यवसाय को लेकर अध्ययन किया गया है। अतः भविष्य में तनाव के अन्य कारकों का भी अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक विद्यालयों से सम्बन्धित है । अतः आगामी शोध अन्य स्तर के विद्यालयों पर किया जा सकता है।
3. तनाव को आयु वर्ग भी प्रभावित करता है। अतः भविष्य में व्यावसायिक तनाव को आयु वर्ग के सन्दर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।
4. शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव को उनकी वैवाहिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य में भी अध्ययन किया जा सकता है।
5. प्रस्तुत अध्ययन एक छोटे क्षेत्र तथा छोटे न्यादर्श पर किया गया है जिससे परिणाम की सार्थक भी प्रभावित हो सकती है। अतः इसे बड़े न्यादर्श पर प्रशासित करके परिणामों की विश्वसनीयता बढ़ाई जा सकती है ।

**सन्दर्भ सूची :–**

1. लाल, रमन बिहारी (2013) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार मेरठ, रस्तोगी पब्लिकेशन्स
2. माथुर, एस०एस० (2011) शिक्षा मनोविज्ञान आगरा, विनोद पुस्तकर मदिर ।
3. मांटेसरी मारिया (2009) मानव का निर्माण नई दिल्ली राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण।
4. जायसवाल, सीताराम (2012) शिक्षा मनोविज्ञान लखनऊ प्रकाशन केन्द्र।
5– गुप्ता, एस०पी० (2013) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
6. दिनकर, रामधारी सिंह (1995) संस्कृति के चार अध्याय, इलाहाबाद लोक भारती प्रकाशन।
7. भटनागर सुरेश, (2005) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. बलूनी अनूप (2019), माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव का अध्यन, International Journal of Applied Research Page no. 124.
9. सुल्ताना, ए. (1995) ए स्टडी ऑफ ऑकुपेशनल स्ट्रेश एमंग वर्किंग वूमन इन रिलेशन टु पर्सनैलिटि पैटर्न एण्ड सर्टेन डेमोग्राफिक वैरिएबुल, पी–एच. डी. थीसिस पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
10. पीथर्स, आर. टी. एण्ड फोगार्टी जे. जे. (2005) ऑकुपेशनल स्ट्रेश एमंग वोकेशनल टीचर्स, ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजूकेशनल साइकोलॉजी, पृष्ठ 3–14।